Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

10. प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत का हिंदी साहित्य में योगदान

सपना शुक्ला
पी-एच.डी. भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र
sapnamgahv@gmail.com

सारांश

साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है। समाज में जो कुछ भी घटित होता है, उसका छाप साहित्य में झलकती है। इसको सफल बनाने में प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल, जगनारायण रॉय, ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर', मोहनलाल मोहित, सोमदत्त बखोरी आदि का योगदान अद्वितीय है। इस साहित्य-काल में अभिमन्यु अनत जी का नाम स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाता है। जिस प्रकार मॉरीशस की स्वतंत्रता के पीछे सर शिवसागर रामगुलाम का बहुत बड़ा योगदान रहा है, उसी प्रकार मॉरीशस के हिंदी साहित्य की नींव को स्थापित करने में अभिमन्यु अनत का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अपनी अमूल्य कृतियों के माध्यम से उन्होंने भारत के साहित्यिक-सांस्कृतिक संबंधों पर अधिक बल दिया है। विविध विधाओं में लेखनी चलाने के कारण उनके साहित्य में एकरूपता, अस्मिता, भाषा-संस्कृति तथा नई पीढ़ी की स्थापना के साथ विश्व मंच पर मान-सम्मान देखने को मिलता है। इसलिए वे भारत में इतने प्रसिद्ध हुए है, अथवा यह कहा जाए कि भारत में उन्हीं के बलबूते पर मॉरीशस देश की चर्चा शुरू होने लगी, तो गलत नहीं होगा। अतः आज मॉरीशसीय हिंदी साहित्य जिस शिखर पर पहुंचा है, उसका श्रेय भी अभिमन्यु अनत को ही जाता है। उनकी रचनाओं में 32 उपन्यास, 7 कहानी संग्रह, 5 नाटक, 4 कविता संग्रह, 3 जीवनी, 1 आत्मा-कथा, 1 अनुवाद, 1 सहलेखन, 4 प्रतिनिधि संकलन एवं संपादन से जुड़ी अनेक पुस्तकें प्रकाशन में आयी हैं।

शब्द कुंजी : प्रवासन, परिचय, उपन्यास, कहानी, काव्य क्षेत्र, नाटक, अन्य विधाएँ

प्रस्तावना:

मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के इतिहास में अभिमन्यु अनत का एक संपूर्ण युग है, जो 'अभिमन्यु अनत युग' नाम से प्रचलित है। उनका हिंदी साहित्य न सिर्फ मॉरीशस में, अपितु अन्य देशों में भी चर्चा का विषय बना। प्रारंभिक काल में श्री राजेन्द्र अरुण जी ने अभिमन्यु अनत के लेखों से प्रभावित होकर यह माँग की थी कि उन्हें हिंदी-साहित्य जगत में अपना स्थान मिले। इसका उल्लेख उन्होंने डॉ. श्यामधर तिवारी के शोध प्रबंध 'अभिमन्यु अनतः व्यक्तित्व एंव कृतित्व' के एक लेख में किया है। उन्हें दुःख था कि भारत में जो मान-सम्मान उन्हें दिया जाता है, यहाँ अपने देश में नहीं दिया जाता है। उनकी 'अभिमन्यु अनतः एक बातचीत' नामक पुस्तक में वर्णित है कि मॉरीशस में वे आज भी अनजान हैं और 15 साल बाद भी वे अनजान रहेंगे क्योंकि यहाँ पाठकों की कमी है। अनत का जब प्रथम उपन्यास प्रकाशित हुआ, तो उनके खरीदार हिंदी शिक्षक नहीं अपितु अन्य भाषा-भाषी अध्यापक थे। अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिमन्यु अनत ने लगभग हर एक विधा की चर्चा की है। उनकी साहित्य-साधना चालीस वर्षों के उपरांत तक की है।

प्रवासन:

प्रवासन शब्द का अर्थ है भौगोलिक क्षेत्र में पशुओं और पक्षियों जैसे जीवों का संचालन। यह एक स्थान से दूसरे स्थान को, व्यक्तिगत रूप से आवास समूहों में, लोगों के संचलन की और भी संकेत करता है। प्रवासन का, तदनुसार, अर्थ हुआ आवास का परिवर्तन। प्रवासन की दूरी, दिशा एवं अवधि महत्वपूर्ण नहीं होतीं, फिर भी इन तीनों में से कोई भी कारक किसी देश में प्रवासन की प्रकृति को पुनर्परिभाषित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ऐसे अनेक कारक हैं जो लोगों को प्रवासन के लिए प्रेरित करते हैं। ये कारण आर्थिक, सामाजिक अथवा राजनीतिक हो सकते हैं। जब लोग किसी देश के भीतर ही भीतर प्रवासन करते हैं तो इसे आंतरिक प्रवासन कहा जाता है। जब प्रवासन में किसी देश- विशेष की सीमाओं को पार करना शामिल हो तो उसे अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन कहा जाता है। विश्व के नवीन इतिहास में जनसमुदायों के बड़े हिस्सों का लम्बी दूरियों तक प्रवसन देखा गया है। उदाहरण के लिए, यहूदी जर्मनी से विश्व के अन्य भागों में चले गए ताकि वे हिटलर के नाजीवादी शासन-व्यवस्था के तहत अत्याचारों से बच सकें। नवीन विश्व इतिहास में वृहद-स्तरीय प्रवासन का एक अन्य उदाहरण ब्रिटिश भारत के विभाजन और 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् लोगों का संचलन है। पाकिस्तान के नव-निर्मित राज्य में हिंदुओं और सिखों ने भारत की ओर प्रवासन किया। बदले में भारत के मुसलमान पाकिस्तान चले गए। अनुमान है कि 1947-1950 की अवधि में एक करोड़ लोग पाकिस्तान से भारत आए और 75 लाख मुस्लिम भारत से पाकिस्तान चले गए।

अभिमन्यु अनत का परिचय:

मॉरीशस के हिन्दी कथा-साहित्य सम्राट अभिमन्यु अनत की आज पुण्यतिथि है। 09 अगस्त 1937 को मॉरीशस के उत्तर प्रान्त स्थित त्रिओले गांव में जन्मे अभिमन्यु अनत की मृत्यु 80 वर्ष की उम्र में 04 जून 2018 को हुई।

9 अगस्त, 1937 को त्रिओले, मॉरीशस में जन्मे अभिमन्यु अनत ने हिन्दी शिक्षण, रंगमंच, हिन्दी प्रकाशन आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य किए हैं। तात पसीना, लहरों की बेटी, एक बीघा प्यार, गांधीजी बोले थे इत्यादि उपन्यास, केक्टस के दांत, गुलमोहर खोल उठा इत्यादि कविता संग्रह तथा अपने सम्पादकीय व अन्य आलेखों के माध्यम से गत 50 वर्षों से हिन्दी साहित्य को एक वैश्विक पहचान देने के लिए प्रयासरत रहे हैं।

उन्होंने 18 वर्ष तक हिन्दी का अध्यापन किया और वे 3 साल युवा मंत्रालय के नाट्य कला विभाग में नाट्य प्रशिक्षक रहे। उन्होंने अपनी उच्च-स्तरीय हिन्दी उपन्यासों और कहानियों के द्वारा मॉरीशस को हिन्दी साहित्य में मंच पर प्रतिष्ठित किया। अभिमन्यु अनत का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ। आर्थिक कठिनाइयों की वजह से वे सुचारु रूप से ओपचारिक शिक्षा अधिक ग्रहण नहीं कर पाए लेकिन अपने श्रम से प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं पढ़कर उन्होंने अपनी लेखकीय कला का प्रमाण दिया। वे एक सजग, प्रतिबद्ध और कर्मठ रचनाकार थे।

अभिमन्यु का मूल भारत की ही मिट्टी है। इनके पूर्वज अन्य भारतीयों के साथ अंग्रेज़ों द्वारा वहाँ गन्ने की खेती में श्रम करने के लिए लाये गए थे। मज़दूरों के रूप में गये भारतीय अंततः वहीं पर बस गए। मॉरीशस काल-क्रम से अंग्रजों के शासन से मुक्त हुआ। भारतीय जो श्रमिक बनकर वहाँ गए थे, उनकी दूसरी-तीसरी पीढ़ियाँ पढ़ी-लिखी और सम्पन्न हैं। उनका जीवन स्तर बहुत ऊँचा है।

अभिमन्यु की भारतीय पृष्ठभूमि ने उन्हें हिन्दी की सेवा के लिए उत्साहित किया और उन्होंने अपने पूर्वजों की मातृभूमि का ऋण अच्छी तरह से चुकाया। वे मॉरीशस के कथा-शिल्पी हैं, किन्तु उन्होंने हिन्दी कविता की एक नया आयाम दिया है। उनकी कविताओं का भारत के हिन्दी साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

अभिमन्यु अनत को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जैसे साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, यशपाल पुरस्कार, जनसंस्कृति सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि।

उनके लिखी कविताओं, कहानी, नाटक और उपन्यासों में करीब चार दर्जन रचनाएं ऐसी हैं जिन्हें हिंदी साहित्य में ऊंचा स्थान प्राप्त है। लाल पसीना उनका कालजयी महाकाव्यात्मक उपन्यास है।उन्होंने अनेक वर्षों तक महात्मा गांधी संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'वसंत के संपादक एवं सर्जनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष रहे। आप 'वसंत एवं बाल-पत्रिका रिमझिम के संस्थापक थे। दो वर्षों तक महात्मा गांधी संस्थान में हिन्दी अध्यक्ष रहे व तीन वर्ष तक युवा मंत्रालय में नाट्य कला विभाग में नाट्य प्रशिक्षक के पद पर रहने के अतिरिक्त अठारह वर्ष तक हिन्दी अध्यापन कार्य किया।

सर्वप्रथम अभिमन्यु अनत का कथाकार रूप देखने को मिलता है, जिसमें उन्होंने 45 सालों में 31 उपन्यास, 7 कहानी संग्रह एवं 1 लघुकथा लिखी हैं। उन्हें प्रेमचन्द की भाँति मॉरीशस का उपन्यास-सम्राट माना जाता है। इस युग का श्री गणेश उन्हीं के उपन्यास से होता है। उनके ये तीन उपन्यास सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं- 'लाल पसीना' (1977), 'गांधी जी बोले थे' (1984), 'और पसीना बहता रहा' (1993)। 'लाल पसीना' नामक उपन्यास में गिरमिटिया मजदूरों पर हुए अत्याचारों तथा उनके संघर्ष का उल्लेख किया गया है। 'गांधी जी बोले थे' के अंतर्गत उन्होंने गांधी जी की मॉरीशसीय यात्रा की चर्चा की है। इसके माध्यम से उन्होंने यहाँ के आप्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए कहा था कि अपने बच्चों को शिक्षित एवं देश की राजनीति से परिचित कराना अति आवश्यक है। 'और पसीना बहता रहा' नामक उपन्यास शिवसागर रामगुलाम एवं विष्णुदयाल जैसे युग-पुरुषों के योगदान तथा जन आंदोलन पर आधारित है।

उपन्यास

अभिमन्यु अनत के शेष उपन्यासों में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पहलुओं का समावेश हो जाता है। उदाहरणतया –

- ‘लाल पसीना’(1977) उपन्यास अभिमन्यु अनत की अत्यंत चर्चित उपन्यासों में से एक है। यह तीन खंडों में विभक्त है। मॉरीशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस कृति में उन गिरमिटिया भारतीय मजदूरों के शोषण तथा संघर्ष की कथा है, जिन्होनें अपना खून-पसीना बहकर इस द्वीप को समृद्ध किया।

- 'और नदी बहती रही' (1970) के अंतर्गत मजदूरों की दयनीय स्थिति, लाचारी, अत्याचार प्रेम-विवाह, धर्म-संकीर्णता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को चित्रित करते हुये मानव मन के संघर्ष को तथा अन्य स्थितियों को भी दर्शाया गया है।
- 'एक बीघा प्यार' (1972) में उन्होंने देश-प्रेम की भावना को उजागर किया है, साथ ही नवयुवकों को सरकारी नौकरी के बदले खेती-बारी करने के लिए प्रेरित किया है।
- 'जम गया सूरज' (1973) में प्रेम-विवाह और नारी की स्थिति तथा मजदूरों की समस्याओं का चित्रण किया गया है।
- 'तीसरे किनारे पर (1976) एक प्रेम-मूलक कहानी है।
- 'चौथा प्राणी' (1977) में एक निर्धन परिवार की लड़की एवं ग्रामीण जीवन का वर्णन है।
- 'तपती दोपहर' (1978) में शहर में नौकरी करने के बजाय पुनः खेतीहर के जीवन को महत्व दिया है साथ ही प्रेम विवाह तथा शोषितों की दर्द भरी जिंदगी का जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।
- कुहासे का दायरा' (1978) में ग्रामीण जीवन के यथार्थ की सामाजिक, राजनैतिक ,सांस्कृतिक भौगोलिक भौगोलिक समस्याओं का उल्लेख है।
- 'शेफाली' (1979) में वैश्या-जीवन के संघर्ष का अत्यंत मार्मिकता से चित्रण हुआ है। अतीत का सहारा इसमें अधिक लिया गया है। वर्तमान का कम।
- 'हड़ताल कब होगी' (1979) में मॉरीशस के परिप्रेक्ष्य में रंग-भेद एवं संघर्ष की चर्चा की है।
- 'चुन-चुन चुनाव' (1981) में अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला है, जैसे कि राजनीति, छल-कपट, जातिवाद, हार-जीत, भाषा और संस्कृति की समस्या आदि।
- 'अपनी ही तलाश' (1981) आर्थिक प्रगति में दौड़ते मानव का मनोविज्ञान स्पष्ट किया गया है और एक ऐसे समाज का चित्रण जहाँ सारे संबंध अर्थ पर ही आधारित है।
- 'पर पगडंडी नहीं मरती' (1983) के अंतर्गत देश-प्रेम, मजदूरों का संगठन और अच्छे जीवन के लिए संघर्ष है।
- 'अपनी-अपनी सीमा' (1983) में पति-पत्नी के रिश्तों पर केंद्रित लिखा गया है।
- 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' (1985) में दो उपन्यास निहित हैं- 'मार्क ट्वेन का स्वर्ग' और 'फैसला आपका'। प्रथम उपन्यास में मॉरीशस में स्थित नरक अर्थात धनी-निर्धन में भेद-भाव, बेरोजगारी, वेश्यावृत्ति आदि की समस्याएँ हैं। 'फैसला आपका' में राजनेताओं का विरोध किया गया है।
- 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' (1987) में नायिका द्वारा महिला-आंदोलन का नेतृत्व एवं पूँजीपतियों के शोषण का भी उल्लेख मिलता है।

The Asian Thinker

- 'शब्द भंग' (1989) में नशीले पदार्थों के व्यापारियों का पर्दाफाश किया गया है।
- 'अचित्रित' (1990) में वेश्या जीवन व्यतीत करते हुए देश-प्रेम की भावना को उजागर किया है तथा राजनेताओं के कुचरित्र को दिखाया गया है।
- 'लहरों की बेटी' (1995) में एक मछुए की बेटी की यादगार कहानी है।
- 'चलती रहो अनुपमा' (1998) एक आत्मकथात्मक उपन्यास है, जिसमें अनुपमा गांधारी के समान मुश्किलों का सामना करती है, फिर भी पति का साथ देती रहती है। • 'आसमान अपना आँगन' (2000) में मानवीय रिश्तों को ध्यान में रखकर आसमान को भूमि पर लाना चाहा है।
- अस्ति-अस्तु' (2003) यह अभिमन्यु अनत का सामाजिक उपन्यास है जिसमें मॉरीशस में बदलते जीवनमूल्यों ,पीढ़ी-संघर्ष, स्वार्थपरकता, विकृत राजनीति, भ्रष्टाचार उन्मुक्त यौन सम्बन्धों की वकालत मादक द्रवों की तस्करी और उससे प्रभावित युवा- पीढ़ी आदि समस्याओं को पात्रों के जीवन-क्रम एवं चरित्र में पिरोकर प्रस्तुत किया गया है।
- 'हम प्रवासी' (2004) के अंतर्गत अनत जी ने गिरमिटिया मजदूरों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रवासी भारतीयों की पीड़ा तथा दयनीय स्थिति का वर्णन किया है।
- 'क्यों न फिर से' (2004) नामक उपन्यास एक प्रेम-कथा है, जिसमें अजय, जयराम और महिमा की प्रेम-कहानी है। साथ ही साथ देश के राजनैतिक संघर्ष को भी उभारा गया है।
- 'अपना मन उपवन' (2006) के माध्यम से उपन्यासकार ने एक विशेष दिशा की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। वे पर्यावरण से प्रदूषण को मिटाना चाहते हैं।
- 'मेरा निर्णय' (2010) में अनत जी पुनः एक नए विषय तथा नए आयाम के साथ सामाजिक समस्याओं को उभारते हैं।

कहानी:

अभिमन्यु अनत जी के आगमन से पूर्व मॉरीशस में हिंदी कहानी का श्री गणेश हो चुका था। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ छपती थीं। अनत जी की लगभग 150 कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके कहानी संग्रह निम्न हैं।

- खामोशी के चीत्कार (1976)
- इंसान और मशीन (1976)
- वह बीच का आदमी (1981)
- एक थाली समंदर (1987)

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

- बवंडर बाहर भीतर (2002)
- अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ (2002)
- अब कल आयेगा यमराज (2003)

इन कहानी-संग्रहों में लगभग 115 कहानियाँ और 44 लघु कथाएँ उपलब्ध हैं। 100 से अधिक कहानियाँ अभी तक प्रकाशित नहीं हुई हैं। कहानी की दृष्टि से अनत जी का रचनाकाल चार दशकों तक फैला हुआ है, जो बिरले ही किसी अन्य कहानीकार के रूप में देखने को मिलेगा।

- खामोशी के चीत्कार (1976) में 163 कहानियाँ हैं, जिनमें भारतीय आप्रवासी मजदूरों के रहन-सहन तथा उनकी समस्याओं का वर्णन किया गया है। साथ ही मानव-कल्याण एवं अधिकार के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया है।
- इंसान और मशीन (1976) में 44 लघुकथाएँ हैं, जो मॉरीशस के परिप्रेक्ष्य में ही लिखी गयी हैं।
- वह बीच का आदमी (1981) में 18 कहानियाँ हैं, जो प्रेम पर आधारित हैं। उन्होंने अपने पत्रों के जरिये भूमि-प्रेम तथा उस पर शहरी आक्रमण का प्रभाव दर्शाया है।
- एक थाली समंदर (1987) में 24 कहानियाँ हैं, जिनमें जनमानस के यथार्थ-जीवन की झलक पाई जाती है। देश की स्वतंत्रता के उपरांत समाज एवं देश में उत्पन्न समस्याओं का समावेश किया गया है। वे न्याय के पक्षधर रहे हैं। अपनी कृतियों के माध्यम से उन्होंने एक स्वस्थ समजा एवं देश की कामना की है।

काव्य-क्षेत्र

अभिमन्यु अनत ने हिंदी कविता पर भी अपनी लेखनी चलाई है, किंतु इस क्षेत्र में उनके आगमन से पूर्व मॉरीशसीय हिंदी कविता का प्रादुर्भाव हो चुका था। अतएव लगभग 62 कविता संग्रह प्रकाशन में आ चुके थे। उनका प्रथम कविता-संग्रह 'नागफनी में उलझी साँसें' (1977) में प्रकाशित हुआ और तब तक 73 कविता-संग्रह छप चुके थे।

इसके पश्चात अनत जी के तीन कविता संग्रह 'कैक्टस के दाँत' (1982), 'एक डायरी बयान' (1987) तथा 'गुलमोहर खिल उठा' (1994) छपकर आए। उनका नवीनतम कविता संग्रह 'लरजते लम्हे', डॉ. कमल किशोर गोयनका द्वारा संपादित 'अभिमन्यु अनतः समग्र कविताएँ' (1998) में छपा है। 'पसीना किसी का, फसल किसी की' नामक कविता में उन्होंने मजदूर एवं मालिक को लेकर अनेक सवाल खड़े किये हैं, साथ ही अपने खेतीहर जीवन में उन्होंने जितने भी कष्ट सहे हैं; उनका स्वरूप देखने को मिलता है।

अभिमन्यु अनत के पाँच कविता संग्रहों में मॉरीशस के वर्तमान, अतीत व भविष्य की झाँकी पाई जाती है। अतीत और वर्तमान के अंतर्गत आप्रवासी भारतीयों के जीवन से संबंधित हैं। भारतीयों की दयनीय दशा, शोषित जीवन की चीख इत्यादि का उल्लेख उनकी कविताओं का प्रमुख विषय रहा है। इस प्रकार कवि की कविताओं में देश-प्रेम की भावना आ जाती है। उन्होंने अपनी कल्पना-शक्ति के माध्यम से कुशल भाषा में नवीन प्रतीक एवं बिंब-विधान का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें विशिष्ट कवियों की गणना में मानते हैं।

The Asian Thinker

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

नाटक

मॉरीशस के हिंदी-नाटक के इतिहास में अनत जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। उनका मानना है कि नाट्य-कला हमारे पूर्वजों की देन है। उन्होंने त्रिओले गाँव में ही अपना नाट्य-आंदोलन आरंभ किया था। इससे पहले हमारे पूर्वज खुले मैदान या मंदिर के आंगन में रामायण, महाभारत, रामलीला आदि प्रस्तुत करते थे। अनत जी ने 'परिवर्तन' नामक नाटक का मंचन किया है, जिसमें उनकी मुख्य भूमिका रही थी। इसका मंचन 5000 लोगों के सामने किया गया था। इसके बाद उन्होंने एकांकी तथा रेडियो व टेलीविजन नाटक भी लिखे हैं। उन्होंने 'अजंता आर्ट्स' की ओर से 30 नाटक लिखे हैं। वे स्वयं लेखक, निर्देश एवं नाटक-अभिनेता थे। उनके अनुसार यदि एक ही व्यक्ति इन सभी कार्यों को संभाल सकता है, तो नाटक की सफलता निश्चित है। अब तक 'विरोध' (1977), 'तीन दृश्य' (1981), 'गूंगा इतिहास' (1984), रोक लो कान्हा' (1986) एवं 'देख कबीरा हाँसी' (1995) नामक नाटक प्रकाशित हो चुके हैं।

अन्य विधाएँ

साहित्यकार होने के नाते अनत जी ने अन्य विधाओं पर भी प्रकाश डाला है, जैसे कि जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा-वृतांत, लेख, संपादकीय, भेंटवार्ता, लघुकथा आदि जो इस प्रकार हैं-

- जीवनी- 'जन-आंदोलन के प्रणेता प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल' (1986) और 'मजदूर नेता रामनाराण' (1988)
- आत्मकथा-उन्होंने 60 लेखों में अपनी आत्मकथा को प्रस्तुत किया है।
- संस्मरण एवं यात्रा-वृतांत- उन्होंने विभिन्न संस्मरण एवं यात्रा-वृतांत लिखे, जो प्रकाशित हुए और अन्य अप्रकाशित हैं।
- इंटरव्यू-'अभिमन्यु अनतः एक बातचीत' (1984) में 117 पृष्ठों का एक इंटरव्यू है। 'आईने के सामने' नामक भेंटवार्ता 'आत्मविज्ञापन' में प्रकाशित हुई।
- लघुकथा-लघुकथा-साहित्य का प्रारंभ अनत जी की रचना 'इंसान और मशीन' (1976) से हुआ है। इसमें 44 लघुकथाएँ संलग्न हैं, जिनमें जीवन की यथार्थ समस्याओं का वर्णन करते हुए जन सामान्य को जागृत किया गया है।

निष्कर्ष:

अंततोगत्वा यह कहा जा सकता है कि मॉरीशसीय हिंदी साहित्य में अभिमन्यु अनत जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के योगदान से उन्होंने साहित्य-जगत को सफल बनाया है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न होने के कारण अनत जी को राष्ट्र-साहित्यकार की उपाधि दी जाती है। वे अन्य लेखकों के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गए हैं। वे तुलसीदास की लोकमंगल दृष्टि, कबीर की कथन-शैली,महावीर प्रसाद द्विवेदी का संपादकीय दायित्व, निराला का विद्रोह और तेज, प्रेम की सामाजिक, राष्ट्रीय, आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टि, जयशंकर प्रसाद की नाटकीय-शैली तथा अन्य कवियों से प्ररित होकर ही आज एक सर्वगुण संपन्न

The Asian Thinker

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

साहित्कार बन पाए हैं। साहित्य अकादमी ने उन्हें 'महत्तर सदस्यता' से पुरस्कृत किया है। अतः मॉरीशसीय हिंदी-साहित्य में अभिमन्यु अनत का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। अभिमन्यु अनत जी अपने अमूल्य साहित्य के योगदान से हमारे मध्य सदैव जीवित और अमर रहेंगे।

संदर्भ सूची

- अनत, अभिमन्यु (1972, 1999 तृतीय आवृत्ति), एक बीघा प्यार, नई दिल्ली : राजकमल
- अनत, अभिमन्यु (1977, 1997 आवृत्ति), लाल पसीना, नई दिल्ली, राजकमल
- अनत, अभिमन्यु (1982) कैक्टस के दाँत, दिल्ली, ज्ञान भारती
- अनत, अभिमन्यु (1982) अपनी ही तलाश, नई दिल्ली, अक्षर
- अनत, अभिमन्यु (1984) गांधी जी बोले थे, नई दिल्ली, राजकमल
- दीक्षित,डॉ. मीरा(2001).हिन्दी भाषा,समीक्षा प्रकाशन:इलाहाबाद .
- बाहरी,डॉ. हरदेव(2012).हिन्दी भाषा,अभिव्यक्ति प्रकाशन:इलाहाबाद.
- प्रसाद,डॉ. वासुदेवनंदन(1993).आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना,भारतीय भवन प्रकाशन: नयी दिल्ली.
- गोयनका,डॉ. कमलकिशोर(2015).प्रवासी साहित्य जोहान्सबर्ग से आगे,विदेश मंत्रालय भारत सरकार प्रकाशन:नयी दिल्ली.

***

The Asian Thinker